Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

सौन्दर्य की नदी नर्मदा के किनारे पर्यटन

डॉ. ममता पानेरी*

दुनिया भर में जब पर्यटन स्थलों की चर्चा की जाती है तो भारत का नाम भी अग्रेन पंक्ति में लिया जाता है क्योंकि भारत अपनी संस्कृति में विविधता और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए हमेशा से ही दुनिया भर के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। फिर चाहे हम गोवा की बात करें, केरल और कश्मीर की बात करें या कन्याकुमारी की। जहाँ एक प्रदेश अपने तटीय सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है तो दूसरा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए और कन्याकुमारी की तो बात ही एकदम निराली है यह अपनी आध्यात्मिक प्रभा को दूर–दूर तक फैलाए हुए है।

साहित्य को जब हम पर्यटन से जोड़ते हैं तो हमें वहाँ यात्रा–साहित्य इसके सशक्त माध्यम के रूप मे दृष्टिगत होता है हिन्दी साहित्य में यात्रा–वृतान्त की एक सुदृढ़ परंपरा रही है। इनका प्रारंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है जिसमें स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, देवीप्रसाद खत्री, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल, भगवत शरण उपाध्याय, मोहन राकेश और निर्मल वर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है इन समस्त यात्रा वृतान्तकारों ने अपनी देश–विदेश की यात्राओं का इतना रोचक, चित्रात्मक और प्रभावशाली वर्णन अपने साहित्य के माध्यम से किया है कि उनके पठन मात्र से ही हम कई पर्यटक स्थलों की सैर कर आते हैं और इन्हें पढ़कर हमें वैसे ही आनंद और उल्लास को अनुभूति होती है जैसी वहाँ स्वयं जाने पर होती।

प्रस्तुत आलेख में मैंने हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध और चर्चित अमृतलाल वेगड़ की पुस्तक "सौन्दर्य की नदी नर्मदा" को कई पर्यटन स्थलों की सैर का माध्यम बनाया है। प्रस्तुत पुस्तक में अमृतलाल वेगड़ ने हमारे देश की बहुरूपिणी नदी नर्मदा की परिक्रमा का बड़ा ही अद्भुत वर्णन किया है यही नहीं इस यात्रा के दौरान बीच रास्ते में आने वाले गाँवों, वहाँ के निवासियों, उनकी सभ्यता और संस्कृति, वहाँ के रीति–रिवाज इन सभी का वर्णन करने में उन्होंने जो चमत्कार दिखाया है, जिस चित्रात्मक और बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग उन्होंने किया है वह सभी को चमत्कृत कर देने वाला है। पाठक भी वेगड़ जी के साथ ही नर्मदा की परिक्रमा करता हुआ इस मार्ग में आई कठिनाइयों का साक्षी बनता है तथा इसमें आए आनंद का साझी बनता है।

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा नदी की परिक्रमा हेतु अपनी पदयात्रा 1977 से प्रारंभ कर 1987 में समाप्त की और इन ग्यारह वर्षों के दौरान की गई दस यात्राओं के वृतांत को प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से इतने खूबसूरत अंदाज़ में प्रस्तुत किया है कि वह हमें प्रत्येक स्थान से रूबरू कराने में समर्थ है। उनकी यह यात्रा जबलपुर से प्रारंभ होकर भरूच पर समाप्त होती है। नर्मदा नदी जो अमरकंटक से प्रारंभ होकर खंभात की खाड़ी पर समाप्त होती है वेगड़ जी इसकी परिक्रमा के दौरान हमें उन सभी पर्यटन स्थलों की सैर कराते चलते हैं जो इस बीच आते हैं।

*सहायक आचार्य, हिन्दी–विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ मान्य विश्वविद्यालय, उदयपुर।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

जीवन का असली आनंद घुम्मकड़ी में है मस्ती और मौज में है प्रकृति के सौन्दर्य का रसपान अपनी आँखों से उसके सामने उसकी गोद में बैठकर ही किया जा सकता है यह अहसास हमें लेखक हारा जबलपुर से छेवलिया की यात्रा के वर्णन में होता है जब वे लिखते है :–

"उस पहाड़ों को लाँघ कर क्या आए थे, एक सर्वथा नवीन सौन्दर्य लोक में आ गए थे। चारों ओर हरियाली ही हरियाली। धीरे–धीरे खेत पीछे छूट गए और जंगल शुरू हो गया। कहीं कोई आदमी नज़र नहीं आ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो हम किसी अछूती भूमि में जा रहे हों। पैर और कंधे दुख रहे थे, पर मन का उल्लास फूट फूट पड़ता था।"

"कभी पहाड़ी पर चढ़ाती, कभी खड्ड में उतारती, कभी झाड़–झांखड़ में उलझाती तो कभी छोटे–छोटे झरनों में उतारती हमारी पगडंडी हमें एक ऐसे स्थान पर ले आई, जिसे देखकर हम सारे खुशी से झूम उठे।"

अमृतलाल वेगड़ ने अपनी पुस्तक "सौन्दर्य की नदी नर्मदा" के माध्यम से हमें मध्यप्रदेश के अतुलनीय सौन्दर्य वाले स्थानों–पचमढ़ी की सागमरनर की चट्टानों, धुआंधार जलप्रपात, भेड़ाघाट और अमरकंटक के प्राकृतिक सौन्दर्य का इतनी खूबसूरती से वर्णन किया है कि पढ़ते ही मन बाग–बाग हो जाता है, एक उदाहरण द्रष्टव्य है:–

"इसी धुआँधार से नर्मदा संगमरमर की कुंजगली में प्रवेश करती है। संगमरमर की चट्टानों को चीरती हुई तंग घाटी में से बहती है और एक अद्भुत सौन्दर्य लोक की सृष्टि करती है। कनक छरी–सी इकहरे बदन की नर्मदा एक जगह इतनी सिमट गई है कि इस स्थान को बंदरकूदनी कहते हैं। यहाँ नर्मदा मानो सुस्ता रही है या अत्यंत मृदु गति से बह रही है। संगमरमर की विशाल दूधिया चट्टानें, अलस गति से बहती नीरव नर्मदा और निपट एकांत, लगता है किसी नक्षत्र–लोक में आ गए हैं।"

इसी प्रकार–"धुआँधार में गुस्से से उबलती–उफनती नर्मदा ने मानो यहाँ मौन की दीक्षा ले ली है। धुआँधार के गर्जन–तर्जन के बाद यहाँ नर्मदा की शांत जलधारा–मानो रौद्र के बाद शांत रस।"

अमृतलाल वेगड़ ने अपने शब्दों के चमत्कार से जो नर्मदा नदी की यात्रा करवाई है ऐसा आनंद तो शायद हमारे स्वयं वहाँ जाने पर भी न आता। क्योंकि एक लेखक की कलम की जो ताकत होती है जो लेखक अपनी आँखों से हमें दिखाता है कई बार वह आनंद प्रत्यक्ष दर्शन में भी नहीं आता क्योंकि आम जन के पास एक साहित्यकार की दृष्टि नहीं होती। यही कारण है कि 'सौन्दर्य की नदी नर्मदा' एक सहृदय प्रकृति प्रेमी को आनंद विभोर कर देती है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने इस यात्रा के दौरान वहाँ की संस्कृति को नृत्य के माध्यम से उजागर किया है–वे लिखते हैं–"मुंडी में देर रात तक लोक–नृत्य देखते रहे। पुरुष सैला नाच रहे थे। हाथ में लकड़ी के बने चटकोला बजाते हुए नाच रहे थे और गा रहे थे–बहुत तेज नाच होता है, थका देने वाला। पुरुष थक गए तो स्त्रियों ने रीना शुरू किया। फिर दोनों ने मिलकर करमा नाचा।"

यही नहीं अमृतलाल वेगड़ हमें भीमबेटका, भोपाल, सांची, ओरछा, मांडू, दतिया आदि ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की भी सैर करवाते हैं तथा साथ ही साथ विमलेश्वर, मींठीतलाई, कोलीयाद व भरूच की समुद्रीयात्रा पर भी हमें साथ ले चलते हैं।

लेखक ने इस यात्रा के दौरान कैसी–कैसी परेशानियों को झेलना पड़ता है उनसे भी

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

हमारा परिचय करवाया, नमूने के तौर पर एक उदाहरण द्रष्टव्य है:– "शाम को बिजौर पहुँचे। उस पार है बरगी कालोनी। यहाँ नर्मदा पर बड़ा बाँध बनाया जा रहा है। बाँध की गहरी खाई–सी नींव में उतर कर ही हम बिजौरा पहुँच सके थे। सोने के लिए पाठशाला मिल गई। एक कमरे की पाठशाला। चौखट में पल्ले नहीं थे। मेरा बिस्तर वहीं था। पांडे जो कहने लगे, "बघेरा आएगा, तो पहला शिकार आप होंगे।" इसी प्रकार उन्हें नर्मदा की परिक्रमा के दौरान ऐसे–ऐसे रास्तों से गुजरना पड़ा जो बेहद खतरनाक थे जैसे शूलपाणेश्वर, जहाँ जिन्दा जाना बेहद मुश्किल था ऐसे रास्तों को भी पार कर अमृतलाल वेगड़ ने ये जोखिम भरी यात्रा हमारे लिए सुलभ करवाई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमृतलाल वेगड़ की इस पुस्तक 'सौन्दर्य की नदी नर्मदा' के साथ–ही हिन्दी का सम्पूर्ण यात्रा–साहित्य उन लोगो के लिए भी पर्यटन स्थलों के भ्रमण का एक अच्छा माध्यम है जो आर्थिक, शारीरिक या अन्य किसी कारणवश यात्रा करने में अक्षम हैं वे लोग घर बैठे इन पर्यटन स्थलों के भ्रमण का लुफ्त उठा सकते हैं और वह भी बिना किसी परेशानी के।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. आधार–सौन्दर्य की नदी नर्मदा– अमृतलाल वेगड़।
[2]. हिन्दी का यात्रा साहित्य: एक विहंगम दृष्टि–रेखा परवीन।
[3]. हिन्दी यात्रा साहित्य: स्वरूप और विकास–प्रतापलाल शर्मा।
[4]. हिन्दी का आधुनिक यात्रा साहित्य– डॉ. अनिल कुमार।
[5]. आखिरी चट्टान–मोहन राकेश।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.